MAKTABA AL FAHEEM-MAU
मुसलमान का अक़ीदा
कुरआन और हदीस की रोशनी में
तालीफ
शैख मुहम्मद बिन जमील ज़ैनु
उसताद दारूल उलूम मक्कह मुकररमाह
हिन्दी तर्जुमा
मुहम्मद नजीब बक्काली
मकतबा अलफहीम
मऊनाथ भंजन-उ.प्र.

मुसलमान का अक़ीदा

कुरआन और हदीस की रौशनी में

लेखक :

शैख़ मुहम्मद बिन जमील ज़ैनू

हिंदी तर्जुमा :

मुहम्मद नजीब बक़्क़ाली

प्रकाशक:

MAKTABA AL-FAHEEM

Raihan Market, 1st Floor, Dhobia Imli Road
Sadar Chowk, Maunath Bhanjan - (U.P.) 275101
Ph.: (O) 0547-2222013, Mob. 9236761926, 9889123129, 9336010224
Email :faheembooks@gmail.com
WWW.faheembooks.com

पुस्तक का नाम : मुसलमान का अकीदा

लेखक : शैख़ मुहम्मद बिन जमील ज़ैनु

अनुवाद मुहम्मद नजीब बक़्काली

प्रकाशन वर्ष 2012

मूल्य 12/-

पृष्ठ 64

प्रकाशक मकतबा अलफहीम मऊ

MAKTABA AL-FAHEEM

Raihan Market, 1st Floor, Dhobia Imli Road
Sadar Chowk, Maunath Bhanjan - (U.P.) 275101
Ph : (O) 0547-2222013, Mob. 9236761926, 9889123129, 9336010224
Email :faheembooks@gmail.com
WWW.faheembooks com

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

बिस्मिलाहिर्रहमानिर्रहीम

मुक़द्दमा

اِنَّ الْحَمْدَ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ، وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّاٰتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ، وَمَنْ يُّضْلِلْ فَلَا هَادِیَ لَهٗ، وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ، وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ ...... اَمَّا بَعْدُ :

अक़ीदे के बारे में यह चंद ज़रुरी सवाल और उन के जवाब हैं हर जवाब के साथ क़ुरआन और हदीस में से इस की दलील दीगई है ताकि पढ़ने वाले को जवाब सहीह होने का इत्मिनान हासिल हो जाए । क्योंकि दुनिया और आख़िरत में अक़ीदए तौहीद ही इंसान की ख़ुश क़िस्मती की बुन्याद है ।

अल्लाह तआला का बंदों पर हक़

सवाल 1: हमें अल्लाह ने किस लिए पैदा किया?

जवाब : हमें अल्लाह ने इस लिए पैदा किया है कि हम उस की बंदगी करें उस के साथ किसी चीज़ को शरीक न बनाएँ । इस की दलील अल्लाह तआला का फ़र्मान:

﴿وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ﴾

और मैं ने जिन्नों और इंसानों को नहीं पैदा किया मगर इसी लिए कि वह मेरी इबादत करें । (ज़ारियात 56)

और रसूलुल्लाह ﷺ का इर्शाद है :

अल्लाह का हक़ बंदों पर यह है कि वह उस की इबादत करें और उस की इबादत में किसी चीज़ को शरीक न करें । (बुख़ारी-मुस्लिम)

सवाल 2: इबादत क्या है ?

जवाब : इबादत उन तमाम अक़वाल व अफ़आल का नाम है जिन से अल्लाह तआला मुहब्बत करता है ।

अल्लाह तआला का बंदों पर हक़

सवाल 1: हमें अल्लाह ने किस लिए पैदा किया?

जवाब : हमें अल्लाह ने इस लिए पैदा किया है कि हम उस की बंदगी करें उस के साथ किसी चीज़ को शरीक न बनाएँ। इस की दलील अल्लाह तआला का फ़र्मान:

﴿ وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ ﴾

और मैं ने जिन्नों और इंसानों को नहीं पैदा किया मगर इसी लिए कि वह मेरी इबादत करें। (ज़ारियात 56)

और रसूलुल्लाह ﷺ का इर्शाद है :

अल्लाह का हक़ बंदों पर यह है कि वह उस की इबादत करें और उस की इबादत में किसी चीज़ को शरीक न करें। (बुख़ारी-मुस्लिम)

सवाल 2: इबादत क्या है ?

जवाब : इबादत उन तमाम अक़वाल व अफ़आल का नाम है जिन से अल्लाह तआला मुहब्बत करता है।

जैसे दुआ, नमाज़, क़ुर्बानी वग़ैरह ।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿قُلْ اِنَّ صَلَاتِيْ وَنُسُكِيْ وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِيْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ﴾

कह दीजिए यक़ीनन मेरी नमाज़, मेरी सारी इबादत, मेरा जीना और मेरा मरना यह सब ख़ालिस अल्लाह के लिए है जो तमाम जहानों का पालने वाला है । (अन्आम १६२) और रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला फ़रमाते हैं :

मेरा बंदा किसी चीज़ के साथ मेरी नज़्दीकी हासिल नहीं करता जो मुझे उन चीज़ों से ज़्यादा महबूब हों जो मैं ने उस पर फ़र्ज़ की हैं ।

सवाल 3 : हम अल्लाह की इबादत कैसे करें ?

जवाब : जिस तरह हमें अल्लाह और उस के रसूल ﷺ ने हुक्म दिया है । अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

ऐ वह लोगो ! जो ईमान लाए हो अल्लाह का हुक्म मानो और रसूलुल्लाह ﷺ का हुक्म मानो और अपने आमाल बरबाद न करो । (मुहम्मद 33)

और आप ﷺ ने फ़रमाया :

जो शख़्स ऐसा अमल करें जिस पर हमारा हुक्म नहीं तो वह मर्दूद है । (मुस्लिम)

सवाल ४ : क्या हम अल्लाह की इबादत खौफ़ और उम्मीद के साथ करें ?

जवाब : जी हाँ, हम उस की इबादत इसी तरह करते हैं अल्लाह तआला ने मोमिनों की हालत बयान करते हुए फ़रमाया :

﴿ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَّ طَمَعًا ﴾

वह अपने रब को (जहन्नम के) खौफ़ और (जन्नत

की) उम्मीद के साथ पुकारते हैं। (सज्दा 16)

और आप ﷺ ने फ़रमाया :

मैं अल्लाह से जन्नत का सवाल करता हूँ और आग से उस की पनाह चाहता हूँ। (अबू दाऊद-सहीह)

सवाल ५ : इबादत में एहसान (बेहतरीन तरीक़े से करना) क्या है ?

जवाब : इबादत में अल्लाह तआला की तरफ़ पूरा पूरा ध्यान रखना एहसान है।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿ اَلَّذِیْ یَرٰىكَ حِیْنَ تَقُوْمُ ○ وَتَقَلُّبَكَ فِی السّٰجِدِیْنَ ○ ﴾

वह आप को उस वक़्त देखता है जब आप क़याम करते हैं और जो सजदह करने वालों में आप के पलटने को देखता है। (शुअरा २१७–२१९)

और रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया :

एहसान यह है कि तुम अल्लाह की इबादत इसी तरह करो कि तुम उसे देख रहे हो और अगर तुम उसे नहीं देखते तो वह तुम्हें देख रहा है । (मुस्लिम)

❁❁

तौहीद की क़िस्में और उसके फ़ाएदे

सवाल १ : अल्लाह तआला ने रसूलों को किस लिए भेजा ?

जवाब : अल्लाह तआला ने उन्हें अपनी इबादत की तरफ़ दावत देने के लिए और उस के साथ शिर्क से रोकने के लिए भेजा । अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِيْ كُلِّ أُمَّةٍ رَّسُوْلًا أَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوْتَ﴾

और हम ने हर उम्मत में रसूल भेजा कि अल्लाह की इबादत करो और ताग़ूत से बचो (ताग़ूत से मुराद

है)। (नहल 36)

और आप ﷺ ने फ़रमाया :

अम्बिया आपस में भाई हैं ..... और उन का दीन एक है। (बुख़ारी-मुस्लिम)

सवाल २: तौहीदे रुबूबियत (रब होने में एक मानना) क्या है ?

जवाब : अल्लाह तआला को रब होने में एक मानने का मतलब यह है कि वह अपने अफ़आल में अकेला है कोई दूसरा उस के कामों में शरीक नहीं, जैसे पैदा करना, तदबीर करना वग़ैरह।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴾

तमाम तारीफ़ अल्लाह के लिए है जो तमाम जहानों का रब है। (फ़ातिह: २)

और आप ﷺ ने फ़रमाया :तू ही आसमानों का और

ज़मीन का रब है । (बुख़ारी-मुस्लिम)

सवाल ३: तौहीदे उलूहियत (इबादत में अकेला मानना) क्या है ?

जवाब : वह उस अकेले ही की इबादत करना है जैसे पुकारना, ज़बह करना और नज़र मानना ।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿ وَ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ﴾

और तुम्हारा माबूद सच्चा एक ही माबूद है उस के सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं वही रहमान रहीम है । (अल- ब–क़र: १६३)

और आप ﷺ ने फ़रमाया :

पहली चीज़ जिस की तरफ़ आप उन्हें दावत दें, वह इस बात की शहादत होनी चाहिए कि अल्लाह के अलावा कोई सच्चा माबूद नहीं । (बुख़ारी-मुस्लिम)

सब से पहले इस बात की दावत दो कि वह अल्लाह को एक मानें । (बुख़ारी)

सवाल ४: अल्लाह के अस्मा व सिफ़ात की तौहीद क्या है ?

जवाब : अल्लाह तआला ने अपनी किताब में अपनी जो सिफ़ात बयान की हैं या रसूलुल्लाह ﷺ ने सहीह अहादीस में अल्लाह की जो सिफ़ात बयान की हैं उन्हें हक़ीक़त जान कर उस के लिए साबित मानना जैसा कि अल्लाह तआला का अर्श पर होना, उस का उतरना, उस का हाथ वग़ैरह, इन सिफ़ात को उस के लिए इस तरह मानना जिस तरह उस के कमाल के लाएक़ है । अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ وَهُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ﴾

उस के मिस्ल कोई चीज़ नहीं और वही (सब कुछ) सुनने वाला देखने वाला है । (शुरा ११)

और आप ﷺ ने फ़रमााया :

अल्लाह तआला हर रात आसमाने दुनिया की तरफ़ उतरता है । (मुस्लिम)

(इस तरह उतरना ज़ो उस के जलाल के लाएक़ है जो उस की मख़लूक़ात में किसी के जैसा नही)

सवाल 5 : अल्लाह कहाँ है ?

जवाब : अल्लाह तआला आसमानों से उपर अर्श पर है और अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿ اَلرَّحْمٰنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوٰى ﴾

रहमान अर्श पर बुलन्द हुआ । (ताहा 5)

सहीह बुख़ारी में इस्तवा का मतलब बयान किया है : यानी चढ़ा और बुलन्द हुआ ।

और आप ﷺ ने फ़रमाया :

बेशक अल्लाह तआला ने एक किताब लिखी ...... तो वह उस के पास अर्श पर है । (बुख़ारी-मुस्लिम)

सवाल ६ : क्या अल्लाह हमारे साथ है ?

जवाब : अल्लाह तआला अपने सुनने, देखने और जानने के लेहाज़ से हमारे साथ है ।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿ لَا تَخَافَآ إِنَّنِى مَعَكُمَآ أَسْمَعُ وَأَرَىٰ ﴾

तुम दोनों मत डरो यक़ीनन मैं तुम्हारे साथ हूँ सुनता हूँ और देखता हूँ । (ताहा 46)

और आप ﷺ ने फ़रमाया :

यक़ीनन तुम एक सुनने वाले क़रीब को पुकारते हो और वह तुम्हारे साथ है । (मुस्लिम)

(अल्लाह तआला अर्श पर होने के बावजूद हमारे साथ है इस की कैफ़ियत बस वही जानता है) (मुतरजिम)

सवाल ७ : तौहीद का क्या फ़ाएदा है ?

जवाब : तौहीद का फ़ाएदा यह है कि बंदा आख़िरत में अज़ाब से महफ़ूज़ रहता है । दुनिया में हिदायत हासिल

होती है और गुनाह दूर हो जाते हैं ।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَمْ يَلْبِسُوْٓا اِيْمَانَهُمْ بِظُلْمٍ اُولٰٓئِكَ لَهُمُ الْاَمْنُ وَهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴾

जो लोग ईमान लाए और अपने ईमान के साथ ज़ुल्म (शिर्क) की मिलावट नहीं की उन्हीं के लिए अमन है और वही हिदायत वाले हैं । (अन्आम :८२)

और आप ﷺ ने फ़रमाया :

बन्दों का हक़ अल्लाह तआला के ज़िम्मे यह है कि वह उस शख़्स को अज़ाब न दे जो उस के साथ किसी चीज़ को शरीक न करे । (बुख़ारी-मुस्लिम)

अमल क़बूल होने की शर्तें

सवाल १ : अमल क़बूल होने की शर्तें क्या हैं ?

जवाब : अल्लाह तआला के नज़दीक अमल क़बूल

होने की तीन शर्तें हैं ।

(१) अल्लाह तआला और उस की तौहीद पर ईमान लाना । अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنَّاتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا﴾

यक़ीनन जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे अमल किए उनके लिए फ़िरदौस के बाग़ों में मेहमानी होगी। (कह्फ़ १०७)

और आप ﷺ ने फ़रमाया :

तू कह मैं अल्लाह पर ईमान लाया और उस पर जमा रह । (मुस्लिम)

(2) **इख़लास** : सिर्फ़ अल्लाह के लिए अमल करना न किसी को दिखाने के लिए करना न सुनाने के लिए ।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿فَاعْبُدِ اللَّهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّينَ﴾

पस अल्लाह की इबादत करो इस हाल में कि तुम ख़ालिस उसी की इबादत करने वाले हो । (ज़ुमर 2)

(3) रसूलुल्लाह ﷺ जो कुछ लेकर आए हैं अमल उस के मुताबिक़ होना । अल्लाह तआला ने फ़र्माया :

﴿ وَمَآ اٰتٰىكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ وَمَا نَهٰىكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا ﴾

जो कुछ रसूलुल्लाह ﷺ दें वह ले लो और जिस चीज़ से तुम्हें मना कर दें उस से रुक जाओ । (हश्र 7)

और आप ﷺ ने फ़रमाया :

जो शख़्स ऐसा अमल करे जिस पर हमारा हुक्म न हो तो वह मरदूद है । (मुस्लिम)

शिर्के अक्बर

सवाल 1 : अल्लाह के नज़्दीक सब से बड़ा गुनाह क्या है ?

जवाब : सब गुनाहों से बड़ा गुनाह अल्लाह के साथ शिर्क करना है। अल्लाह तआला का फ़रमान है :

﴿ يٰبُنَيَّ لَا تُشْرِكْ بِاللّٰهِ إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيْمٌ ﴾

(लुक़मान ने कहा) ऐ बेटे अल्लाह के साथ शिर्क न करना यक़ीनन शिर्क बहुत बड़ा ज़ुल्म है। (लुक़मान १३)

और जब रसूलुल्लाह ﷺ से पूछा गया कि कौन सा गुनाह सब से बड़ा है तो आप ﷺ ने फ़रमाया : कि तू अल्लाह का कोई शरीक बनाए जबकि उस ने तुझे पैदा किया है। (बुख़ारी-मुस्लिम)

सवाल २ : सब से बड़ा शिर्क क्या है ?

जवाब : सब से बड़ा शिर्क अल्लाह तआला के बदले उस के ग़ैर की इबादत करना जैसे ग़ैरुल्लाह को पुकारना, मुर्दों से फ़रयाद करना, मदद मांगना या उन ज़िन्दा लोगों से मदद मांगना जो ग़ाएब हैं पास मौजूद नहीं। अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿وَاعْبُدُوا اللهَ وَلَا تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا﴾

अल्लाह तआला की इबादत करो और उस के साथ किसी चीज़ को शरीक न ठहराओ। (निसा ३६)

और रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया :

बड़े गुनाहों में सब से बड़ा गुनाह अल्लाह के साथ शरीक बनाना है। (बुख़ारी)

सवाल ३: क्या इस उम्मत में शिर्क मौजूद है ?

जवाब : हां मौजूद है। दलील अल्लाह तआला का फ़रमान है।

﴿وَمَا يُؤْمِنُ أَكْثَرُهُمْ بِاللهِ إِلَّا وَهُمْ مُشْرِكُونَ﴾

इन में से अकसर लोग अल्लाह पर ईमान नहीं लाते मगर इस हाल में कि वह मुश्रिक हैं। (युसूफ 106)

और आप ﷺ ने फ़रमाया :

क़यामत क़ाएम नहीं होगी यहाँ तक कि मेरी उम्मत के कुछ क़बीले मुश्रिकीन के साथ मिल जाएँ और यहाँ

तक कि बुतों की पूजा होने लगे । (तिर्मिज़ी - सहीह)

सवाल ४: मुर्दा या ग़ाएब लोगों को पुकारने का क्या हुक्म है ?

जवाब : मुर्दा या ग़ाएब लोगों को पुकारना शिर्के अक्बर में से है । अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿وَلَا تَدْعُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ فَإِنْ فَعَلْتَ فَإِنَّكَ إِذًا مِّنَ الظّٰلِمِيْنَ﴾

अल्लाह के सिवा उन को न पुकारो जो तुम्हें न फ़ाएदा पहुँचाते हैं न नुक़्सान और अगर तुम ने ऐसा किया तो उस वक़्त यक़ीनन तुम ज़ालिमों (मुश्रिकों) से होगे । (यूनुस १०६)

और आप ﷺ ने फ़रमाया : जो शख़्स इस हाल में मरा कि अल्लाह के सिवा किसी शरीक को पुकारता था, आग में दाख़िल होगा । (बुख़ारी)

सवाल ५: क्या दुआ (पुकारना) इबादत है ?

जवाब : जी हाँ दुआ इबादत है, अल्लाह ने फ़रमाया :

﴿ وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دَاخِرِينَ ﴾

तुम्हारे रब ने फ़रमाया कि मुझे पुकारो मैं तुम्हारी पुकार को सुनूंगा जो लोग मेरी इबादत से (यानी दुआ मांगने से) तकब्बुर करते हैं वह ज़लील होकर जहन्नम में दाख़िल होंगे । (ग़ाफ़िर ६०)

और आप ﷺ ने फ़रमाया :

दुआ (पुकारना) ही इबादत है । (अहमद, तिर्मिज़ी-हसन सहीह)

सवाल 6 : क्या मुर्दे पुकार सुनते हैं ?

जवाब : नहीं सुनते । अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿ إِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتَىٰ ﴾

यक़ीनन आप मुर्दों को नहीं सुना सकते । (अन्नमल ८०)

﴿ وَمَآ اَنْتَ بِمُسْمِعٍ مَّنْ فِي الْقُبُوْرِ ﴾

और आप उन को नहीं सुना सकते जो कब्रों में हैं ।

(फ़ातिर २२)

❁❁

शिर्के अक्बर की क़िस्में

सवाल 1: क्या हम मुर्दा और ग़ाएब लोगों से फ़रयाद कर सकते हैं ?

जवाब : हम उन से फ़रयाद नहीं कर सकते । अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَا يَخْلُقُوْنَ شَيْئًا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ اَمْوَاتٌ غَيْرُ اَحْيَآءٍ وَمَا يَشْعُرُوْنَ اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ ﴾

और यह मुश्रिक अल्लाह के सिवा जिन लोगों को पुकारते हैं वह कोई चीज़ पैदा नहीं कर सकते और वह ख़ुद पैदा किए गये हैं । मुर्दा हैं ज़िन्दा नहीं और वह नहीं

जानते कि कब उठाए जाएंगे ।

﴿إِذْ تَسْتَغِيثُونَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ﴾

जब तुम अपने रब से फ़रयाद कर रहे थे तो उस ने तुम्हारी दुआ क़बूल फ़रमाई । (अनफ़ाल 9)

और आप ﷺ ने फ़रमाया :

ऐ जिन्दा हसती, ऐ क़ाएम रहने और क़ाएम रखने वाले तेरी रहमत (के ज़रीये) से ही फ़रयाद करता हूँ । (तिर्मिज़ी-हसन)

सवाल २ : क्या ग़ैरुल्लाह से मदद मांगना जाएज़ है?

जवाब : जाएज़ नहीं । दलील अल्लाह का फ़रमान है :

﴿إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ﴾

सिर्फ़ तेरी ही इबादत करते हैं और तुझ ही से मदद मांगते हैं । (फ़ातिहा 5)

और रसूलुल्लाह ﷺ का इर्शाद :

जब तू सवाल करे तो अल्लाह से सवाल कर और

मदद मांगे तो अल्लाह से मदद मांग । (तिर्मिज़ी-हसन)

सवाल 3: क्या हम ज़िन्दा लोगों से मदद मांग सकते हैं ?

जवाब: जी हाँ । उन चीज़ों में जिन की वह ताक़त रखते हैं ।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿وَتَعَاوَنُوْا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوٰى﴾

और नेकी और परहेज़गारी में एक दूसरे की मदद करो। (माएद: २)

और आप ﷺ ने फ़रमाया :

अल्लाह बन्दे की मदद में होता है जब तक बन्दा अपने भाई की मदद में रहे । (मुस्लिम)

सवाल ४: क्या ग़ैरुल्लाह के लिए नज़र मानना जाएज़ है ?

जवाब: अल्लाह के सिवा किसी की नज़र जाएज़

नहीं । क्योंकि अल्लाह तआला ने फ़रमाय

﴿رَبِّ إِنِّي نَذَرْتُ لَكَ مَا فِي بَطْنِي مُحَرَّرًا﴾

ऐ मेरे रब मैं ने तेरे लिए इस बच्चे की नज़र म
मेरे पेट में है (दुनिया के कामों से) आज़ाद
(आले इम्रान 35) और आप ﷺ ने फ़रमाया
जो शख़्स नज़र माने कि अल्लाह की इताअत
वह उस की इताअत करे और जो नज़र माने कि
की नाफ़रमानी करेगा वह उस की नाफ़रमानी न क
(बुख़ारी)

सवाल 5: क्या ग़ैरुल्लाह के लिए ज़बह करना जाए
है ।

जवाब : जाएज़ नहीं । दलील अल्लाह तआला का
फ़रमान है ।

﴿فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ﴾

अपने रब ही के लिए नमाज़ पढ़ें और क़ुर्बानी करें ।

(अलकौसर २)

और आप ﷺ ने फ़रमाया :

अल्लाह तआला ने लानत की उस पर जो ग़ैरुल्लाह के लिए ज़बह करे । (मुस्लिम)

सवाल 6: क्या हम कब्र वालों की नज़्दीकी हासिल करने के लिए कब्रों का तवाफ़ कर सकते हैं ?

जवाब : कअ़बा के अलावा हम किसी का तवाफ़ नहीं कर सकते । अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿وَلْيَطَّوَّفُوا بِالْبَيْتِ الْعَتِيقِ﴾

और चाहिए कि वह क़दीम घर का तवाफ़ करें ।

(अलहज्ज 92)

और आप ﷺ ने फ़रमाया :

जिस ने सात चक्कर बैतुल्लाह का, तवाफ़ किया और दो रकअ़तें पढ़ीं (यह अ़मल) एक गर्दन आज़ाद करने की तरह होगा । (इब्ने माजह-सहीह)

सवाल ७: जादू का क्या हुक्म है ?

जवाब : जादू कुफ़्र है । अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿ وَلَٰكِنَّ الشَّيَاطِينَ كَفَرُوا يُعَلِّمُونَ النَّاسَ السِّحْرَ ﴾

लेकिन शैतानों ने कुफ़्र किया जो लोगों को जादू सिखाते थे । (अलब-क़-र: १०२)

और आप ﷺ ने फ़रमााया :

सात हलाक करने वाली चीज़ों से बचो अल्लाह के साथ शिर्क और जादू ...... आख़िर तक । (मुस्लिम)

सवाल ८: क्या हम अर्राफ़ (चोरीयाँ बताने वाले) और काहिन (आगे की ख़ब्रें बताने वाले) को इल्मे ग़ैब के दावे में सच्चा मान सकते हैं ?

जवाब : हम उन्हें सच्चा नहीं मान सकते । क्योंकि अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿ قُلْ لَا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ الْغَيْبَ إِلَّا اللَّهُ ﴾

कह दीजिए आसमानों में और ज़मीन में जो भी है अल्लाह के अलावा कोई ग़ैब नहीं जानता। (नमल ६५)

और आप ﷺ ने फ़रमाया :

जो शख़्स किसी चोरीयाँ बताने वाले या आगे की ख़बरें बताने वाले के पास आया फिर उस की बात में उसे सच्चा जाना तो उस ने उस चीज़ का इन्कार किया जो मुहम्मद ﷺ पर नाज़िल की गई है।

(अहमद-सहीह)

सवाल ९: क्या कोई शख़्स ग़ैब जानता है ?

जवाब : कोई शख़्स ग़ैब नहीं जानाता । हाँ किसी रसूल को अल्लाह तआला ग़ैब की किसी बात की ख़बर देदे तो अलग बात है।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿عٰلِمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖٓ اَحَدًا اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ﴾

वह ग़ैब का इल्म रखने वाला है अपने ग़ैब पर किसी को ख़बर नहीं देता सिवाए किसी रसूल के जिसे वह पसंद करे। (जिन्न २६-२७)

(ग़ैब की जानकारी देने से ग़ैब की कोई बात मालूम हो जाए तो आदमी ग़ैब का जानने वाला नहीं हो जाता। वरना तमाम मुसलमान भी ग़ैब जानने वाले हो जाएँगे क्योंकि रसूलुल्लाह ﷺ ने वह्य से मालूम होने वाली बहुत सी ग़ैब की ख़बरे उम्मत को बताईं हैं। जैसे क़यामत के हालात, क़यामत के क़रीब की पेशगोइयाँ वगैरह। मालूम हुआ ग़ैब की बात की ख़बर देने से उसे जानना और चीज़ है और ग़ैब का जानने वाला होना और चीज़ है। ग़ैब को जानने वाली सिर्फ़ अल्लाह तआला की ज़ात है)

और आप ﷺ ने फ़रमाया : अल्लाह के अलावा कोई ग़ैब नहीं जानता। (तबरानी-हसन)

सवाल १०: क्या शिफ़ा हासिल करने के लिए धागा या कड़ा या छल्ला पहन सकते हैं ?

जवाब : हम यह चीज़ें नहीं पहन सकते । क्योंकि अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿وَإِنْ يَمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ﴾

अगर अल्लाह तआला तुम्हें कोई तकलीफ़ पहुँचाए तो उस के अलावा कोई उसे दूर करने वाला नहीं ।

(अल-अनआम 17)

और आप ﷺ ने फ़रमाया

ख़बरदार यह तुम्हारी कमज़ोरी ही को बढ़ाएगा इसे उतार कर फैंक दो क्योंकि (इसी हालत में) अगर तुम मर गए तो कभी कामियाबी नहीं पा सकोगे । (मुस्तदरक हाकिम)

सवाल ११: क्या हम ख़र मोहरे, घूंघे वग़ैरह लटका सकते है ?

जवाब : शिफ़ा या नज़र से बचने के लिए नहीं लटका सकते क्योंकि अल्लाह तआला ने फ़रमाया ।

﴿وَإِنْ يَمْسَسْكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ﴾

अगर अल्लाह तआला तुम्हें कोई तकलीफ़ पहुँचाए तो उस के अलावा कोई उसे दूर करने वाला नहीं। (अन्आम १७)

और आप ﷺ ने फ़रमाया :

जिस ने कोई तमीमा लटकाया उस ने यक़ीनन शिर्क किया । (अहमद-सहीह)

(तमीमा से मुराद वह मनके या घूँघे हैं जो नज़रे बद से बचने के लिए लटकाए जाते है)

सवाल १२: इस्लाम के मुख़ालिफ़ क़ानूनों पर अमल करने का क्या हुक्म है ।

जवाब : अगर जाएज़ समझ कर इस्लाम के मुख़ालिफ़ क़वानीन पर अमल करे या उन के सहीह होने का

अक़ीदा रखे तो यह कुफ़्र है ।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿ وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰفِرُوْنَ ﴾

और जो शख़्स उस के मुताबिक़ फ़ैसला न करे जो अल्लाह ने नाज़िल फ़रमाया है तो यही लोग काफ़िर हैं। (अलमाएद: ४४)

और आप ﷺ ने फ़रमाया :

और जब तक उन के हाकिम अल्लाह की किताब के मुताबिक़ फ़ैसला नहीं करेंगे और अल्लाह के नाज़िल किए हुए हुक्मों पर अमल नहीं करेंगे अल्लाह तआला आपस में उन के लड़ाई डाल देगा । (इब्ने माजा)

सवाल 13: हम शैतान के इस सवाल को कैसे रद्द करेंगे कि अल्लाह ताअला को किस ने पैदा किया ?

जवाब: जब शैतान किसी के दिल में यह वसवसा

डाले वह अल्लाह से पनाह मांगे ।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿وَإِمَّا يَنزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطَٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ﴾

और आप को शैतान की तरफ़ से कोई चोका लगे तो अल्लाह की पनाह मांगे ।

और रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें सिखाया है कि हम शैतान की चाल को रद्द करें और यह कहें ।

मैं अल्लाह और उस के रसूलों पर ईमान लाया । अल्लाह एक है । अल्लाह बे नियाज़ है । न उस ने किसी को जना न किसी ने उस को जना और न ही कोई उस का शरीक व उस की बराबरी का है । फिर बाईं तरफ़ तीन बार थूक दे और शैतान से पनाह मांगे और ज़्यादा सोचने से रुक जाए । इस तरह यह वसवसा ख़त्म हो जाएगा ।

(यह उन हदीसों का ख़ुलासा है जो अहमद बुख़ारी,

मुस्लिम और अबू दाऊद में है)

सवाल १४: शिर्क अकबर का क्या नुक़सान है ?

जवाब : शिर्क अकबर की वजह से आदमी हमेशा के लिए जहन्नमी हो जाता है ।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿ إِنَّهُ مَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَأْوَاهُ النَّارُ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ ﴾

जो कोई शख़्स अल्लाह के साथ शिर्क करता है अल्लाह ने उस पर जन्नत हराम कर दी और उस का ठिकाना आग है और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं । (माएदः ७२)

और आप ﷺ ने फ़रमाया : जो शख़्स अल्लाह तआला से मिला कि उस के साथ किसी को शरीक करता हो, आग में दाख़िल होगा । (मुस्लिम)

सवाल १५: क्या शिर्क के साथ अमल का कोई

फ़ाएदा होगा ?

जवाब : शिर्क के साथ अ़मल का कोई फ़ाएदा नहीं क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने अंबिया अलैहिमुस्सलाम के बारे में फ़रमाया :

﴿وَلَوْ اَشْرَكُوْا لَحَبِطَ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ﴾

अगर वह अल्लाह के साथ शरीक ठहराते तो उन के तमाम अ़मल बरबाद हो जाते । (अनआ़म 88)

और आप ﷺ ने फ़रमाया :

अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं मैं तमाम शरीकों से ज़्यादा शिर्क से बे परवाह हूँ जिस शख़्स ने कोई ऐसा अ़मल किया जिस में मेरे साथ मेरे ग़ैर को भी शरीक किया मैं उसे और उस के शिर्क को छोड़ देता हूँ ।

शिर्के असग़र

सवाल 1: शिर्के असग़र क्या है ?

जवाब : शिर्के असग़र रिया (दिखाने के लिए अमल करना) है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿ فَمَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَّلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖٓ اَحَدًا ﴾

जो शख़्स अपने परवरदीगार की मुलाक़ात की उम्मीद रखता हो वह नेक अमल करे और अपने रब की इबादत में किसी को शरीक न करे। (कहफ़ ११०)

और आप ﷺ ने फ़रमाया :

मुझे तुम्हारे बारे में जिस चीज़ का सब से ज़्यादा ख़ौफ़ है वह शिर्के असग़र रिया (लोगों को दिखाने के लिए अमल करना) है। (अहमद-सहीह)

यह कहना भी शिर्के असग़र में शामिल है :

अगर अल्लाह और फ़लाँ शख़्स न होता (तो यह हो जाता वह हो जाता)। जो अल्लाह चाहे और तू चाहे।

और आप ﷺ ने फ़रमाया : यह मत कहो, जो

अल्लाह चाहे और फ़लाँ चाहे, बल्कि यूँ कहो, जो अल्लाह चाहे फिर फ़लाँ चाहे। (अबू दाऊद-सहीह)

सवाल 2: क्या ग़ैरुल्लाह की क़सम उठाना जाएज़ है?

जवाब: अल्लाह के सिवा किसी क़िस्म की क़सम उठाना जाएज़ नहीं। अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿قُلْ بَلَىٰ وَرَبِّي لَتُبْعَثُنَّ﴾

कह दीजिए क्यों नहीं, मुझे अपने रब की क़सम है तुम ज़रुर उठाए जाओगे। (तग़ाबुन 7)

और आप ﷺ ने फ़रमाया :

जिस ने ग़ैरुल्लाह की क़सम उठाई उस ने यक़ीनन शिर्क किया। (अहमद-सहीह)

और आप ﷺ ने फ़रमाया :

जिसे क़सम उठानी हो वह अल्लाह की क़सम उठाए या ख़ामोश रहे। (बुख़ारी-मुस्लिम)

वसीला पकड़ना और सिफ़ारिश तलब करना

सवाल 1: हम अल्लाह की तरफ़ किस चीज़ का वसीला पकड़ें ?

जवाब : वसीला पकड़ने की कुछ सुरतें जाएज़ हैं कुछ नाजाएज़।

(1) जाएज़ सूरतें यह हैं ।

★ अल्लाह तआला के अस्मा (नामों) और उस की सिफ़ात के वास्ते से दुआ करना ।

★ अपने नेक आमाल को वसीला बना कर पेश करना।

★ किसी जिंदा इन्सान से दुआ करवाना ।

दलीलें : अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿وَلِلّٰهِ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى فَادْعُوْهُ بِهَا﴾

और सब से अच्छे नाम अल्लाह ही के हैं तो उसे उन के

साथ पुकारो । (आराफ़ १८०)

और अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿يَآأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَابْتَغُوْٓا إِلَيْهِ الْوَسِيْلَةَ﴾

ऐ वह लोगो ! जो ईमान लाए हो अल्लाह से डरो और उस की तरफ़ वसीला तलाश करो । (माएद: 35)

इब्ने कसीर (रह.) ने क़तादा से नक़ल करते हुए इस का मतलब बयान फ़रमाया : यानी उस की इताअत और उस की रज़ा के मुताबिक़ अमल करने के साथ उस की नज़्दीकी तलाश करो ।

और आप ﷺ ने फ़रमाया :

ऐ अल्लाह मैं तुझ से हर उस नाम के साथ सवाल करता हूँ जो तेरा नाम है । (अहमद-सहीह)

और आप ने उस सहाबी से फ़रमाया जिस ने आप ﷺ से जन्नत में आपके साथ का सवाल किया था ।

अपने बारे में ज़्यादा सजदों (यानी नमाज़ के) साथ मेरी मदद करो (जो एक नेक अमल है) ।

हमें अल्लाह तआला से रसूलुल्लाह ﷺ से और औलिया अल्लाह से जो मुहब्बत है उस के वास्ते से भी दुआ जाएज़ है क्योंकि यह एक नेक अमल है । इसी तरह से अल्लाह तआला को अपने रसूल ﷺ और अपने औलिया से जो मुहब्बत है उस के वसीले से भी दुआ जाएज़ है क्योंकि मुहब्बत अल्लाह की सिफ़त है।आमाल के वसीले से दुआ करने की एक मिसाल सहीह बखुारी में ग़ार वाले तीन आदमियों का क़िस्सा भी है जिन्होंने अपने नेक आमाल के वसीले से दुआ की तो अल्लाह ने उन की मुश्किल दूर फ़रमा दी ।

(२) नाजाएज़ वसीला : मुर्दों को पुकारना उन से हाजतें तलब करना जैसा कि आजकल हो रहा है, यह शिर्क अकबर है ।

और अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿وَلَا تَدْعُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ فَإِنْ فَعَلْتَ فَإِنَّكَ إِذًا مِّنَ الظّٰلِمِيْنَ﴾

अल्लाह के अलावा उन को मत पुकारिए जो न आप को फ़ाएदा देते हैं न नुक़्सान, अगर आप ने ऐसा किया तो यक़ीनन उस वक़्त आप ज़ालिमों (मुश्रिकों) से होंगे। (यूनुस 106)

(3) बिदअ़त वसीला : यह कहना कि परवरदीगार! रसूलुल्लाह ﷺ या किसी और बुज़ुर्ग के जाह व हुर्मत (मरतबे) के वसीले से हमारी दुआ कुबूल फ़र्मा यह बिदअ़त है। क्योंकि सहाबा ﷺ ने यह काम नहीं किया। देखीए अमीरुल-मोमिनीन उमर ﷺ ने अब्बास ﷺ का वसीला पकड़ा मगर उस वक़्त जब वह जिन्दा थे उन से दुआ करवाई, मरे हुए का वसीला नहीं पकड़ा यहाँ तक कि रसूलुल्लाह ﷺ की वफ़ात

के बाद उनका वसीला भी नहीं पकड़ा।

यह वसीला कभी कभी शिर्क तक पहुँचा देता है । जब यह अक़ीदा हो कि अल्लाह तआला दुनिया के हाकिम और अमीर की तरह किसी बशर के वास्ते का मुहताज है क्योंकि उस ने ख़ालिक़ को मख़्लूक़ के जैसा समझ लिया ।

वसीले की और ज़्यादा तफ़सील के लिए शैख़ अलबानी को किताब "तवस्सुल व अहकामिही व अनवाइही" को पढ़ीए ।

सवाल 2: क्या दुआ के लिए किसी इन्सान के वास्ते की ज़रुरत है ?

जवाब : दुआ के लिए किसी इन्सान के वास्ते की ज़रुरत नहीं क्योंकि अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿ وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ ﴾

और जब मेरे बंदे आप से मेरे बारे में सवाल करें तो

यक़ीनन मैं क़रीब हूँ । (अलब-क़-र: 186)

और आप ﷺ ने फ़रमाया : यक़ीनन तुम एक सुनने वाले क़रीब को पुकारते हो और वह् तुम्हारे साथ है (अपने इल्म के साथ) । (मुस्लिम)

सवाल ३ : क्या जिंदों से दुआ करवाना जाएज़ है ?

जवाब : हाँ जिंदा लोगों से दुआ की दरखास्त करना जाएज़ है मुर्दों से नहीं । अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह ﷺ को जब आप जिंदा थे मुख़ातिब करते हुए फ़रमाया :

﴿وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَٰتِ﴾

और अपने गुनाहों के लिए और ईमानदार मर्दों और ईमानदार औरतों के लिए बख़्शिश तलब करें ।

(मुहम्मद १९)

और सहीह हदीस में है जिसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है ।

एक ख़राब नज़र वाला आदमी नबी ﷺ के पास आया और कहा, आप अल्लाह से दुआ कीजिए कि वह मुझे आफ़ियत अता फ़रमाए ।

(आप की वफ़ात के बाद किसी सहाबी ने आप से दुआ की दरख़ास्त नहीं की इस लिए किसी फ़ौत शुदह से दुआ की दरख़ास्त करना जाएज़ नहीं ।)

सवाल ४: रसूल का वास्ता क्या है ?

जवाब : रसूल का वास्ता यह है कि आप ने दीन पहुँचा दिया । अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿ يَآيُّهَا الرَّسُوْلُ بَلِّغْ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ﴾

ऐ रसूल ﷺ जो कुछ आप के रब ने आप की तरफ़ नाज़िल किया है उसे पहुँचा दीजिए । (माएद: 67)

और जब सहाबा رضي الله عنهم ने कहा :

हम शहादत देंगे कि आप ने यक़ीनन (दीन) पुहँचा दिया तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया :

ऐ अल्लाह गवाह हो जा । (मुस्लिम)

सवाल ५: हम रसूलुल्लाह ﷺ की सिफ़ारिश की दरख़ास्त किस से करें ?

जवाब : हम रसूलुल्ल ﷺ की सिफ़ारिश की दरख़ास्त अल्लाह तआला से ही करेंगे ।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿ قُلْ لِلَّهِ الشَّفَاعَةُ جَمِيعًا ﴾

कह दीजिए सिफ़ारिश सब की सब अल्लाह ही के लिए है । (ज़ुमर 44)

और आप ﷺ ने सहाबी को यह कहने की तालीम दी:

ऐ अल्लाह मेरे बारे में आप ﷺ की सिफ़ारिश क़बूल फ़रमा । (तिर्मिज़ी-हसन सहीह)

और आप ﷺ ने फ़रमााय :

मैं ने अपनी दुआ क़यामत के दिन सिफ़ारिश के लिए

छुपा रखी है उस के लिए जो मेरी उम्मत में से इस हाल में मरे कि अल्लाह के साथ किसी चीज़ को शरीक न ठहराता हो। (मुस्लिम)

सवाल ६: क्या हम ज़िंदों से सिफ़ारिश तलब कर सकते हैं?

जवाब: जिन्दों से दुनिया के कामों में सिफ़ारिश तलब कर सकते हैं। अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

﴿مَنْ يَّشْفَعْ شَفَاعَةً حَسَنَةً يَّكُنْ لَّهٗ نَصِيْبٌ مِّنْهَا وَمَنْ يَّشْفَعْ شَفَاعَةً سَيِّئَةً يَّكُنْ لَّهٗ كِفْلٌ مِّنْهَا﴾

जो शख़्स अच्छी सिफ़ारिश करे उस के लिए उस में से हिस्सा होगा और जो शख़्स बुरी सिफ़ारिश करे उस के लिए उस में से बोझ होगा। (निसा ८५)

और आप ﷺ ने फ़रमाया:

सिफ़ारिश करो तुम्हें अज्र दीया जाएगा। (अबू दाऊद-सहीह)

सवाल 7 : क्या रसूलुल्लाह ﷺ की तारीफ़ में मुबालग़ा (बढ़ाना चढ़ाना) कर सकते हैं ?

जवाब : हम आप ﷺ की तारीफ़ में मुबालग़ा नहीं करेंगे । अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوحَىٰ إِلَيَّ أَنَّمَا إِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَّاحِدٌ﴾

कह दीजिए मैं तो तुम्हारी तरह का एक बशर ही हूँ मेरी तरफ़ वह्य की जाती है कि तुम्हारा सच्चा माबूद एक ही माबूद है । (क़हफ़ 110)

और रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया :

मुझे उस तरह हद से न बढ़ाओ जिस तरह ईसाइयों ने ईसा बिन मरयम عليه السلام को हद से बढ़ा दिया क्योंकि मैं तो सिर्फ़ बन्दा हूँ तो तुम यह कहो कि वह अल्लाह का बन्दा और उस का रसूल है । (बुख़ारी)

जिहाद, वला और हुक्म

सवाल १ : जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह (अल्लाह की राह में जिहाद) का क्या हुक्म है ?

जवाब : माल जान और ज़बान के साथ जिहाद वाजिब है । अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿ اِنْفِرُوْا خِفَافًا وَّ ثِقَالًا وَّ جَاهِدُوْا بِاَمْوَالِكُمْ وَ اَنْفُسِكُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ﴾

निकलो हलके हो या बोझल और अपने मालों और जानों के साथ अल्लाह की राह में जिहाद करो । (तौब: ४१)

और आप ﷺ ने फ़रमाया :

मुश्रिकों से अपने मालों अपनी जानों और अपनी ज़बानों के साथ जिहाद करो । (अबू दाऊद-सहीह)

सवाल २ : वला क्या है ?

जवाब : वला से मुराद मुहब्बत और मदद है ।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया :

﴿ وَالْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ﴾

मोमिन मर्द और मोमिन औरतें एक दूसरे के दोस्त और मददगार हैं । (तौबा 71)

और आप ﷺ ने फ़रमााय :

एक मोमिन दूसरे मोमिन के लिए इमारत की तरह है उस का एक हिस्सा दूसरे को क़ुव्वत देता है ।

सवाल 3: क्या काफ़िरों से दोसती और उन की मदद जाएज़ है ?

जवाब : काफ़िरों से दोस्ती और उन की मदद जाएज़ नहीं । अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया :

﴿ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَإِنَّهٗ مِنْهُمْ ﴾

और तुम में से जो कोई शख़्स उन से दोस्ती करे वह उन ही में से है । (अलमाएद: 51)

और आप ﷺ ने फ़रमााय :

बेशक बनी फ़ुलाँ के घर वाले मेरे दोस्त नहीं हैं ।
(अहमद-सहीह)

सवाल 4: वली कौन होता है ?

जवाब : परहेज़गार मोमिन ही वली होता है । अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया :

﴿أَلَآ إِنَّ أَوْلِيَآءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ﴾

ख़बरदार अल्लाह के औलिया (दोस्तों) पर कोई ख़ौफ़ नहीं न वह ग़म खाएँगे वह लोग जो ईमान लाए और डरते थे ।

और आप ﷺ ने फ़रमाया :
मेरे दोस्त तो सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला और नेक मोमिन हैं ।
(अहमद-सहीह)

सवाल 5: मुसलमान किस चीज़ के साथ फ़ैसला करें ?

जवाब : मुसलमान क़ुरआन और हदीस के साथ फ़ैसला करें । अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया :

﴿ وَاَنِ احْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ ﴾

उन के दर्मियान उस चीज़ के साथ फ़ैसला करो जो अल्लाह तआ़ला ने नाज़िल फ़रमाई । (माएद: 49)

और आप ﷺ ने फ़रमाया :

ऐ ग़ैब और हाज़िर को जानने वाले अपने बन्दों के दर्मियान तू ही फ़ैसला करेगा । (मुस्लिम)
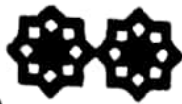
क़ुरआन और हदीस पर अ़मल

सवाल १ : अल्लाह तआ़ला ने क़ुरआन क्यों नाज़िल फ़रमाया ?

जवाब : अल्लाह ताअ़ला ने क़ुरआन अ़मल करने के लिए नाज़िल फ़रमाया ।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया :

﴿ اِتَّبِعُوْا مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ ﴾

पैरवी करो उस की जो तुम्हारी तरफ़ तुम्हारे रब की तरफ़ से नाज़िल किया गया । (अअराफ़ 3)

और आप ﷺ ने फ़रमाया :

क़ुरआन पढ़ो उस पर अ़मल करो और उसे खाने का ज़रीया मत बनाओ । (मुस्नद अहमद)

सवाल २ : सहीह हदीस पर अ़मल का क्या हुक्म है ?

जवाब : सहीह हदीस पर अमल वाजिब है क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया :

﴿ وَمَآ اٰتٰكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ وَمَا نَهٰكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا ﴾

जो कुछ रसूल ﷺ तुम्हें दें ले लो और जिस से मना कर दें उस से रुक जाओ । (हश्र 7)

और आप ﷺ ने फ़रमाया :

मेरे तरीक़े और हिदायत वाले, भलाई वाले ख़ुल्फ़ा के

तरीक़े को लाजिम पकड़ो और इसे मज़बूती से थाम लो। (अहमद-सहीह)

सवाल ३: क्या हदीस के बग़ैर क़ुरआन के साथ हमारा गुज़ारा हो सकता है ?

जवाब : हदीस के बग़ैर सिर्फ़ क़ुरआन से हम कभी गुज़ारा नहीं कर सकते । अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

﴿وَاَنْزَلْنَا اِلَيْكَ الذِّكْرَ لِتُبَيِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ اِلَيْهِمْ﴾

हम ने आप की तरफ़ ज़िक्र नाज़िल किया ताकि लोगों के लिए वह चीज़ बयान करें जो उन की तरफ़ नाज़िल की गई । (नहल 44)

और आप ﷺ ने फ़रमाया :

याद रखो ! मुझे क़ुरआन और उस के साथ उस की मिस्ल दी गई है । (अबू दाऊद)

सवाल ४: क्या हम किसी की बात को अल्लाह तआला और उस के रसूल ﷺ की बात से आगे रख

सकते हैं ?

जवाब : हम किसी की बात को अल्लाह और उस के रसूल ﷺ की बात से आगे नहीं रख सकते क्यों कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿ يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُقَدِّمُوا بَيْنَ يَدَيِ اللَّهِ وَرَسُولِهِ ﴾

ऐ वह लोगो ! जो ईमान लाए हो अल्लाह और उस के रसूल ﷺ से आगे मत बढ़ो । (अलहुजुरात 1)

और आप ﷺ ने फ़रमाया :

ख़ालिक़ की नाफ़रमानी में किसी मख़लूक़ की फ़रमाँबरदारी जाएज़ नहीं । (तबरानी-सहीह)

और इब्ने अब्बास رضي الله عنه ने फ़रमाया :

मुझे डर है तुम पर आसमान से पत्थर न बरसें मैं तुम्हें कहता हूँ रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया और तुम कहते हो अबू बक्र और उमर رضي الله عنهما ने फ़रमाया ।

सवाल ५ : जब आपस में हमारा इख़्तिलाफ़ हो जाए

तो क्या करें ?

जवाब : हम अल्लाह की किताब और सहीह हदीसों की तरफ़ पलटेंगे । अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया :

﴿فَإِنْ تَنَازَعْتُمْ فِي شَيْءٍ فَرُدُّوهُ إِلَى اللَّهِ وَالرَّسُولِ إِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ذَٰلِكَ خَيْرٌ وَأَحْسَنُ تَأْوِيلًا﴾

फिर अगर तुम किसी चीज़ में झगड़ पड़ो तो उसे अल्लाह तआ़ला और उस के रसूल ﷺ की तरफ़ लौटा दो अगर तुम अल्लाह तआ़ला और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हो यह बेहतर है और अनजाम के लेहाज़ से सब से अच्छा है । (निसा 59)

और आप ﷺ ने फ़रमाया :

तुम मेरी और हिदायत पाए हुए ख़ुल्फ़ा की सुन्नत को लाज़िम पकड़ो और उसे मज़बूती से थाम लो । (अहमद- सहीह)

सवाल ६: तुम अल्लाह तआ़ला और उस के रसूल ﷺ से किस तरह मुहब्बत करते हो ?

जवाब : मैं उन की फ़रमाबरदारी और उन के अहकाम की पैरवी के साथ उन से मुहब्बत करता हूँ ।

अल्लाह तआ़ला ने फरमाया :

﴿قُلْ إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ﴾

कह दीजिए अगर तुम अल्लाह से मुहब्बत करते हो तो मेरी पैरवी करो अल्लाह तआ़ला तुम से मुहब्बत करेगा, तुम्हें तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और अल्लाह तआ़ला बख़्शने वाला रहम करने वाला है । (आले इम्रान ३१)

और आप ﷺ ने फ़रमाया :

तुम में से कोई शख़्स मोमिन नहीं होता जब तक मैं उस के नज़्दीक उस के वालिद, उस की औलाद और

तमाम लोगों से ज़्यादा महबूब न हो जाऊँ ।

सवाल ७: क्या हम अमल छोड़ कर तक़दीर पर भरोसा कर लें ?

जवाब : हम अमल नहीं छोड़ेंगे क्योंकि अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿فَاَمَّا مَنْ اَعْطٰى وَاتَّقٰى ۝ وَصَدَّقَ بِالْحُسْنٰى ۝ فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلْيُسْرٰى ۝﴾

तो जिस ने दिया और तक़वा इख़्तियार किया और सब से अच्छी बात को सच्चा माना हम उसे आसान रास्ते की सहूलत देंगे । (अल्लैल 5-7)

और आप ﷺ ने फ़रमाय :

अमल करो क्योंकि हर शख़्स के लिए वह चीज़ आसान कर दी गई है जिस के लिए वह पैदा किया गया है । (बुख़ारी मुस्लिम)

सुन्नत और बिदअत

सवाल १: क्या दीन में कोई बिदअ़त हसना है ?

जवाब : दीन में कोई बिदअ़त हसना नहीं । इस की दलील अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है :

﴿ اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا ﴾

आज मैं ने तुम्हारे लिए तुम्हारे दीन को मुकम्मल कर दिया और तुम पर अपनी नेअ़मत पूरी कर दी और तुम्हारे लिए इस्लाम को बतौरे दीन पसंद किया । (अलमाएद: ३)

और रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया :

और हर बिदअ़त गुमराही है और हर गुमराही आग में है । (अहमद-सहीह)

सवाल २: दीन में बिदअ़त क्या है ?

जवाब : दीन में बिदअ़त यह है कि इस में कोई

ज़्यादती या कमी कर दी जाए । अल्लाह तआला ने मुश्रिकीन की बिदआत पर रद्द करते हुए फ़रमाया :

﴿ اَمْ لَهُمْ شُرَكٰٓؤُا شَرَعُوْا لَهُمْ مِّنَ الدِّيْنِ مَا لَمْ يَاْذَنْۢ بِهِ اللّٰهُ ﴾

क्या उन के लिए ऐसे शरीक हैं जिन्हों ने उन के लिए दीन की वह राह निकाली जिस की अल्लाह ने इजाज़त नहीं दी । (शूरा 21)

और आप ﷺ ने फ़रमाया :

जिस शख़्स ने हमारे इस काम यानी दीन में वह चीज़ निकाली जो इस में नहीं है तो वह मर्दूद है । (बुख़ारी-मुस्लिम)

सवाल ३ : क्या इस्लाम में कोई सुन्नते हस्ना है ?

जवाब : हाँ इस्लाम में सुन्नते हस्ना है ।

आप ﷺ ने फ़रमाया :

जिस ने इस्लाम में अच्छी सुन्नत जारी की उस के लिए

उस का अज्र होगा और उन लोगों का अज्र भी जो उस के बाद उस पर अ़मल करेंगे बग़ैर इस के कि उन के सवाब में कोई कमी हो । (बुख़ारी)

सवाल ४: मुसलमानों को ग़लबा कब हासिल होगा ?

जवाब : मुसलमानों को ग़लबा उस वक़्त हासिल होगा जब वह अपने रब की किताब और अपने नबी ﷺ की सुन्नत को दोबारा अमली तौर पर नाफ़िज़ करेंगे, तौहीद फैलाएँगे और शिर्क की तमाम सूरतों से लोगों को डराएँगे और अल्लाह के दुश्मनों के लिए जितनी क़ुव्वत तैयार कर सकेंगे करेंगे ।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓاْ إِن تَنصُرُواْ ٱللَّهَ يَنصُرْكُمْ وَيُثَبِّتْ أَقْدَامَكُمْ﴾

ऐ वह लोगो ! जो ईमान लाए हो अगर तुम अल्लाह (के दीन) की मदद करोगे तो वह तुम्हारी मदद करेगा और

तुम्हारे क़दम जमा देगा। (मुहम्मद 7)

और फ़रमाया :

﴿ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِى الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِى ارْتَضٰى لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا يَعْبُدُوْنَنِىْ لَا يُشْرِكُوْنَ بِىْ شَيْـًٔا ﴾

और अल्लाह तआला ने उन लोगों से वादा किया है जो तुम में से ईमान लाए और जिन्हों ने नेक अमल किए वह उन्हें ज़रुर ज़मीन में हाकिम बनाएगा जिस तरह उन लोगों को हाकिम बनाया जो उन से पहले थे और उन के लिए उन के इस दीन को ज़मीन में मज़बूती से क़ाएम करेगा जो उस ने उन के लिए पसंद फ़रमाया है और उन्हें उन के ख़ौफ़ के बदले अमन अता फ़रमाएगा। वह मेरी इबादत करेंगे मेरे साथ किसी चीज़ को शरीक

नहीं करेंगे। (नूर ५५)

दुआ मुस्तजाब

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया किसी बंदे को कोई फ़िक्र या ग़म पहुँचे और वह यह दुआ पढ़े तो अल्लाह तआला उस की फ़िक्र और गम को दूर कर देता है और उस की जगह कुशादगी अता फ़रमाता है।

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ عَبْدُكَ وَابْنُ عَبْدِكَ وَابْنُ اَمَتِكَ، نَاصِيَتِىْ بِيَدِكَ، مَاضٍ فِىَّ حُكْمُكَ، عَدْلٌ فِىَّ قَضَاؤُكَ اَسْئَلُكَ بِكُلِّ اسْمٍ هُوَلَكَ، سَمَّيْتَ بِهٖ نَفْسَكَ، اَوْ اَنْزَلْتَهٗ فِىْ كِتَابِكَ اَوْ عَلَّمْتَهٗ اَحَدًا مِّنْ خَلْقِكَ، اَوِاسْتَاْثَرْتَ بِهٖ فِىْ عِلْمِ الْغَيْبِ عِنْدَكَ، اَنْ تَجْعَلَ الْقُرْاٰنَ رَبِيْعَ قَلْبِىْ، وَنُوْرَ صَدْرِىْ، وَجَلَآءَ حُزْنِىْ وَذَهَابَ هَمِّىْ۔

ऐ अल्लाह यक़ीनन मैं तेरा बन्दा, तेरे बन्दे का बेटा तेरी बन्दी का बेटा हूँ। मेरी पेशानी तेरे हाथ में है तेरा हुक्म।

तुम्हारे क़दम जमा देगा। (मुहम्मद 7)

और फ़रमाया :

﴿ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِى الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِى ارْتَضٰى لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا يَعْبُدُوْنَنِىْ لَا يُشْرِكُوْنَ بِىْ شَيْئًا ﴾

और अल्लाह तआला ने उन लोगों से वादा किया है जो तुम में से ईमान लाए और जिन्हों ने नेक अमल किए वह उन्हें ज़रुर ज़मीन में हाकिम बनाएगा जिस तरह उन लोगों को हाकिम बनाया जो उन से पहले थे और उन के लिए उन के इस दीन को ज़मीन में मज़बूती से क़ाएम करेगा जो उस ने उन के लिए पसंद फ़रमाया है और उन्हें उन के ख़ौफ़ के बदले अमन अता फ़रमाएगा। वह मेरी इबादत करेंगे मेरे साथ किसी चीज़ को शरीक

नही करेगे । (सूर ५५)

दुआ मुस्तजाब

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया किसी बंदे को कोई फ़िक्र या ग़म पहुँचे और वह यह दुआ पढ़े तो अल्लाह तआला उस की फ़िक्र और ग़म को दूर कर देता है और उस की जगह कुशादगी अता फ़रमाता है ।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ عَبْدُكَ وَابْنُ عَبْدِكَ وَابْنُ اَمَتِكَ، نَاصِيَتِیْ بِيَدِكَ، مَاضٍ فِیَّ حُكْمُكَ، عَدْلٌ فِیَّ قَضَاؤُكَ اَسْئَلُكَ بِكُلِّ اسْمٍ هُوَ لَكَ، سَمَّيْتَ بِهٖ نَفْسَكَ اَوْ اَنْزَلْتَهٗ فِیْ كِتَابِكَ اَوْ عَلَّمْتَهٗ اَحَدًا مِّنْ خَلْقِكَ اَوِاسْتَاْثَرْتَ بِهٖ فِیْ عِلْمِ الْغَيْبِ عِنْدَكَ اَنْ تَجْعَلَ الْقُرْاٰنَ رَبِيْعَ قَلْبِیْ وَنُوْرَ صَدْرِیْ وَجَلَاۤءَ حُزْنِیْ وَذَهَابَ هَمِّیْ۔

ऐ अल्लाह यक़ीनन मैं तेरा बन्दा, तेरे बन्दे का बेटा तेरी बन्दी का बेटा हूँ । मेरी पेशानी तेरे हाथ में है तेरा हुक्म

मुझ में नाफ़िज़ है । तेरा फ़ैसला मेरे बारे में बिल्कुल इनसाफ़ पर है । मैं तुझ से सवाल करता हूँ हर उस नाम के साथ जो तेरा है जो तू ने ख़ुद अपना नाम रखा है या अपनी किताब में उतारा है या अपनी मख़लूक़ में से किसी को सिखाया है या इल्मे ग़ैब में उसे अपने पास रखने को पसंद किया है कि तू क़ुरआन को मेरे दिल की बहार, मेरे सीने का नूर, मेरे ग़म को साफ़ करने वाला और मेरी फ़िक्र को दूर करने वाला बना दे ।

क़ुरआन और हदीस से ली गई दुआएं

लेखक

सईद बिन अली अल-क़हतानी

हिंदी तर्जुमा

मुहम्मद नजीब बक़्क़ाली

Rs.: 45/-

Scanned by CamScanner